तिरुमल तिरुपति देवस्थान

बालसप्तगिरि

सचित्र मासिक पत्रिका

सप्तगिरि का परिशिष्ट

दिसंबर-2020

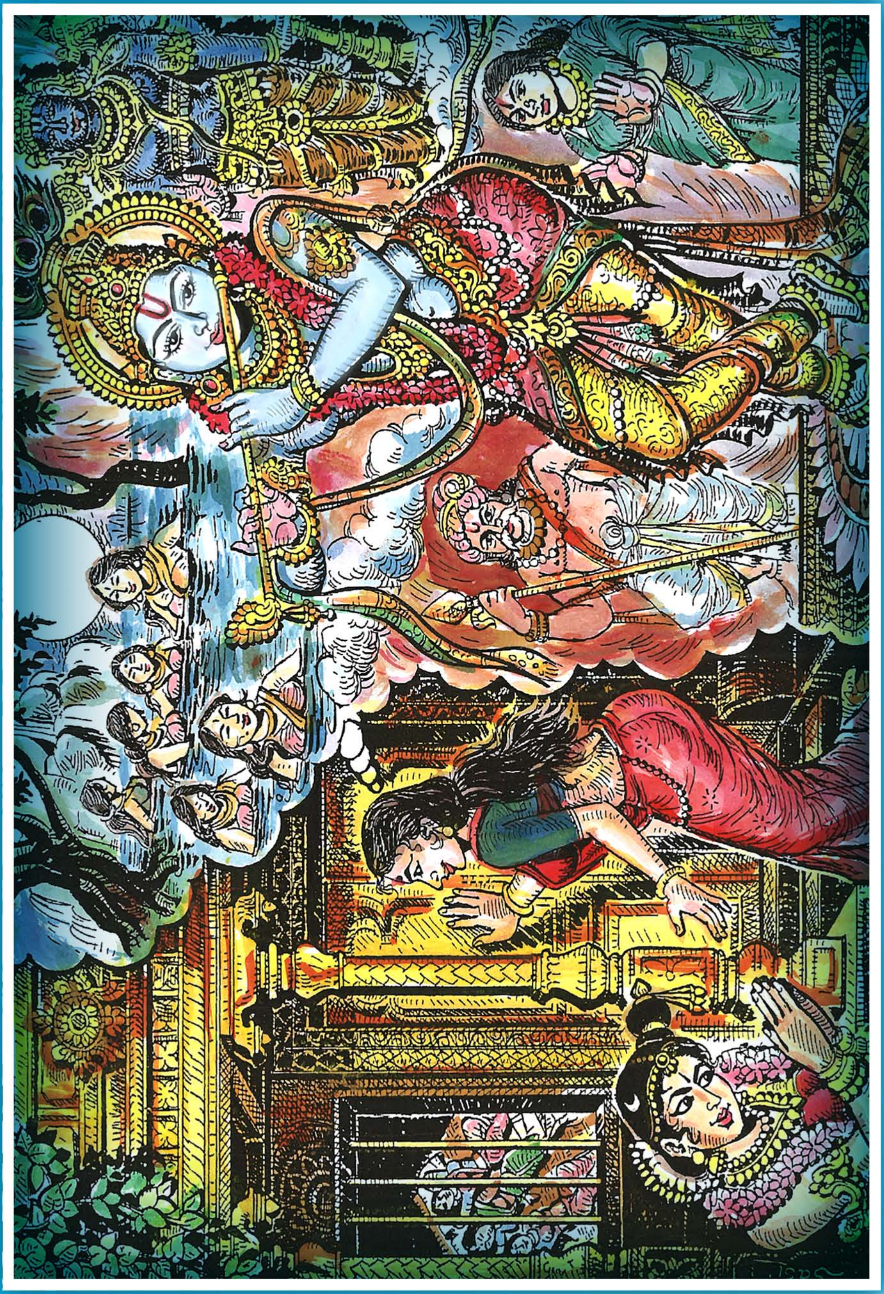

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

बालसप्तगिरि

सप्तगिरि का परिशिष्ट

दिसंबर-२०२०

वर्ष-०१
अंक-१०

विषयसूची

हिन्दू देवता	हनुमान डॉ.सी.आदिलक्ष्मी	32
पन्निहराल्वार	श्री मधुरकवि स्वामीजी श्री कमल किशोर हि. तापडिया	34
कन्नड हरिदासवरेण्य	श्री मध्वाचार्य श्रीमती सी.मंजुला	36
चित्रकथा	प्रह्लाद-गाथा तेलुगु मूल - श्रीमती दीपश्री हिन्दी अनुवाद - डॉ.एम.आर.राजेश्वरी चित्रकार - श्री के.तुलसीप्रसाद	38
बालनीति	बुराई पर भलाई की जीत श्री सी.सुधाकर रेड्डी	42
विशिष्ट बालक		44
'क्विज'	डॉ.जी.मोहन नायुडु	45
चित्रलेखन		46

मुखचित्र - गोदादेवी

चौथा कवर पृष्ठ - रामभक्त हनुमान

हिन्दू देवता

हनुमान

- डॉ.सी.आदिलक्ष्मी

चैत्र शुक्ल २४ मंगलवार परमशिव अपने परमाराध्य श्रीराम की मुनि-मनमोहिनी अवतार लीला के दर्शन एवं उसमें सहायता प्रदान करने के लिए अपने अंश ग्यारहवें रुद्र से इस शुभ तिथि और शुभ मुहूर्त में माता अंजना के गर्भ से पवन-पुत्र महावीर हनुमान के रूप में धरती पर अवतरित हुए। अंजना-नन्दन के धरती पर चरण रखने के समय प्रकृति-पूर्णतया रम्य हो गयी थी। दिशायें प्रसन्न थीं। सरिताओं में स्वच्छ सलिल बहने लगा था। प्राकट्य काल में ही हनुमाल जी का सौन्दर्य अतुलनीय एवं अवर्णनीय था। हनुमान ने भगवान सूर्य को अपने अध्यापक के रूप में चुना और उनसे ग्रंथों को पढ़ाने के लिए अनुरोध किया। सूर्य सहमत हो गये। हनुमान जी ने अपना पूरा जीवन भगवान राम की सेवा में बिताया। हर कदम पर उनके रक्षक बने रहे। उन्होंने भगवान राम की सेवा केलिए पूरा जीवन ब्रह्मचर्य का पालन किया।

यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकांजलिम्
वाष्पवारिपरिपूर्ण लोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम्!!

जहाँ-जहाँ श्री रघुनाथजी का कीर्तन होता है, वहाँ हाथ जोड़े हुए नतमस्तक, नेत्रों में प्रेमाश्रु भरे हुए खड़े रहने वाले राक्षसों के नाशक श्रीहनुमानजी का मैं प्रणाम करता हूँ!!

रामायण कथा के अनुसार

वाल्मीकि रामायण के उत्तरकांड में स्वयं भगवान श्रीराम ने अगस्त्य मुनि से कहा है कि हनुमान के पराक्रम से ही उन्होंने रावण पर विजय प्राप्त की है। हनुमान जी ने विशाल समुद्र को एक छलांग में ही पार कर लिया। समुद्र लांघने के बाद हनुमान जब लंका पहुंचे तो लंकिनी नामक राक्षसी ने उन्हें रोक लिया। हनुमानजी ने उसे परास्त कर लंका में प्रवेश किया। हनुमानजी ने माता सीता को बहुत खोजा, जब हनुमानजी ने माता सीता को देखा, तो वे अति प्रसन्न हुए। हनुमान जी ने

अपना पराक्रम दिखाते हुए लंका में आग लगा दी। युद्ध के दौरान रावण के पुत्र इंद्रजीत ने ब्रह्मास्त्र चलाकर भगवान श्रीराम व लक्ष्मण को बेहोश कर दिया। हनुमानजी औषधियों का पहाड़ लेकर आए। राम-लक्ष्मण व करोड़ों घायल वानर पुनः स्वस्थ हो गए। सकल सद्‌गुणगणनिलय अञ्जनानन्दन दयाधाम हैं। कृपा की मूर्ति हैं। जो पवनकुमार अपने परमप्रभु का दर्शन करते ही आनन्दसिन्धु में निमग्न हो जाते है, वे श्रीरामचरणानुरागी कल्पान्त तक इस भूतल पर क्यों रहना चाहते? निश्चय ही वे श्रीराम के मंगलमय नाम एवं चरित्र-कथा के अनुपम प्रेमी हैं, किंतु इसके साथ ही पृथ्वी के नर- नारियों के प्रति उनकी सहज कृपा ही इसमें हेतु है।

मंजुल मंगल मोदमय मूरति मारुत पूत
अगम सुगम सब काज करु करतल सिद्धि विचारु!!

श्रीरामजी के दूत पवनपुत्र श्री हनुमानजी मनोहर मंगल और आनन्द की मूर्ति हैं। उनका स्मरण करते ही सब सिद्धियां अपने आप सुलभ हो जाती हैं।

धीर, वीर और श्रीरघुवीर के प्रिय पवनकुमार श्रीहनुमानजी का स्मरण करने से कैसे भी अगम कार्य हों सुगम हो जायेंगे, यह निश्चय रखो और निश्चित रहो कि उनकी सफलता तुम्हारे हाथ में ही रहेगी। हनुमानजी की कृपा-दृष्टि समस्त कल्याणों की खनि है। वह जिस पर होती है उस पर श्रीगिरिजा श्रीशिव, श्रीलक्ष्मण, श्रीरामचन्द्र और श्रीजानकी की सदा कृपा रहती है।

श्री हनुमानजी का स्मरण करने से बुद्धि, बल, यश, धैर्य, निर्भयता, आरोग्य, सुदृढ़ता और वाक्पटुता प्राप्त होती हैं। श्रीराम नाम जापक केलिए हनुमानजी कल्पवृक्ष बनकर सबके सब मनोरथ सिद्धकर देते हैं। हनुमानजी ने कहा- जो मेरे स्वामी श्रीराम के मंगलकारी नाम का सदा प्रेमपूर्वक जाप करते हैं उनकेलिए मैं प्रयत्लपूर्वक प्रदाता बना रहता हूँ!

हनुमानञ्जनी सूनुर्वायुपुत्रो महाबलः
रामेष्टः फलिगुनसखः पिङ्गाक्षोऽमितविक्रमः।।
उदधिक्रमणरपैव सीताशोकविनाशकः
राजद्वारे गह्वरे च भयं नास्ति कदाचन''

इन १२ नामों को लेने से श्रीहनुमानजी की स्तुति हो जाती है। रात्रि में सोने के पूर्व या प्रातःकाल जागने पर या यात्रा पर जाते समय ऊपर लिखे नामों द्वारा जो स्तुति करता है, उसके भय दूर हो जाते हैं। सब प्रकार के संकट मिट जाते हैं।

पन्निद्दराल्वार

श्री मधुरकवि स्वामीजी

- श्री कमल किशोर हि तापडिया

मेषे चित्रा समुद्भूतं, पाण्डयदेशे गदांशकम्।
श्रीपरांकुश सद्भक्तं, मधुरं कविमाश्रये।।
अविदितविषयान्तरश्शठारेरूपपनिषदामुपगानमात्रभोगः।
अपि च गुणवशातदेकशेषी मधुरकविहृदये ममाविरस्तु।।

आचार्य - श्री शठकोप स्वामीजी

रचना - कण्णिनुण् शिरुताम्बू (दिव्यप्रबन्ध)

अवतार स्थल - तिरुक्कोलूर

परमपद स्थल - आलवार तिरुनगरी

श्री मधुरकवि स्वामीजी आलवारों में से एक हैं। भगवान के कुमुद द्वारपाल के अवतार है।

भागवत शेषत्व के कारण, जैसे शत्रुघ्नजी का वैभव बहुत विशेष है वैसे ही शठकोप स्वामीजी में निष्ठा के कारण मधुरकवि स्वामीजी का वैभव अत्यन्त विशेष है।

पिल्लै लोकाचार्य स्वामीजी श्रीवचनभूषण ग्रंथ के ४०७, ४०८ एवं ४०९ सूत्र में कहते हैं आचार्य निष्ठा का वैभव करना १० आलवारों के दिव्य प्रबंधों से संभव नहीं है, सिर्फ मधुरकवि स्वामीजी के कण्णिनुण् शिरुताम्बू दिव्य प्रबंध से मात्र संभव है। क्योंकि सभी आळवार भगवान के अनुभव में भागवतों का गुणगान करते हैं और भगवान के विरह में

भागवतों से नाराज हो जाते हैं। लेकिन मधुरकवि स्वामीजी सदैव अपने आचार्य शठकोप स्वामीजी के गुणगान में ही मग्न रहते थे।

श्रीवरवरमुनि स्वामीजी उपदेश रत्नमाला के २५ और २६ व्याख्यानों में मधुरकवि स्वामीजी के वैभव का वर्णन करते हुए कहते हैं - मूल मंत्र में नमः पद भागवत शेषत्व को दर्शाता है। वैसे ही कण्णिनुण् शिरुताम्बू में मधूरकवि स्वामीजी आचार्य भक्ति को दर्शाते हैं। भगवत भक्ति की चरम सीमा भागवत भक्ति है।

श्रीस्वामीजी-द्वारा रचित कण्णिनुण् शिरुताम्बु को ४००० दिव्य प्रबंधों में स्थान दिया गया है। सभी दिव्य प्रबंधों में भगवान की स्तुति है, परन्तु इस एक प्रबन्ध में सिर्फ आचार्य की स्तुति है। सहस्रगीति के अनुसन्धान के पहले कण्णिनुण् शिरूताम्बु का अनुसंधान होता है।

जैसे सूर्योदय के पहिले सूर्य किरणें आती हैं, वैसे ही श्रीशठकोप स्वामीजी के अवतार के पहिले श्रीमधुरकवि स्वामीजी का अवतार हुआ।

सामवेद ब्राह्मण परिवार में स्वामीजी का अवतार हुआ। जात कर्म, नाम करण, अन्न-प्रासन, उपनयन इत्यादि संस्कार उचित समय पर सम्पन्न हुये और वेद, वेदान्त, पुराण इतिहास इत्यादि का अध्ययन सम्पन हुआ। भगवान को छोड़कर पूर्ण रूप से संसार से निर्लिप्त थे। उत्तर भारत के दिव्य देशों की यात्रा के लिए प्रस्थान किया। कुछ दिनों बाद उनको दक्षिण दिशा से दिव्य तेज प्रकाशित हुआ। उस प्रकाश की तरफ बढते हुए आळवार तिरुनगरी शठकोप स्वामीजी की सन्निधि में आकर पहुँचे। शठकोप स्वामीजी पूर्ण रूप से भगवद अनुभव में डूबे हुए थे। मधुरकवि स्वामीजी शठकोप स्वामीजी की सन्निधि में रहते हुये दिव्य ज्ञान को प्राप्त करते हैं और उनके मुखारविन्द से तिरुविरुत्तम, तिरुवासीरियम, पेरिय तिरुवंदादि और तिरुवायमोली का दिव्य उपदेश प्राप्त करते हैं।

श्रीस्वामीजी की आचार्य निष्ठा अवर्णनीय और अतुलनीय है।

शिक्षा - मनुष्य को अपना जीवन सफल बनाने यानी भगवत्प्राप्ति करने के लिए आचार्य निष्ठा अत्यन्त आवश्यक है।

कन्नड हरिदासवरेण्य

श्री मध्वाचार्य

- श्रीमती सी.मंजुला

मध्वाचार्य का जन्म दक्षिण कन्नड जिले के उडिपि शिवल्ली नामक स्थान के पास पाजक नामक गाँव में सन् १२३८ ई में हुआ, इनके पिता का नाम श्री नारायण और इनकी माता का नाम श्रीमती वेदवती था। अल्पावस्था में ही ये वेद और वेदांगो के अच्छे ज्ञाता हुए और संन्यास लिया। इन्होंने पूजा, ध्यान, अध्ययन और शास्त्र चर्चा में अत्यंत निष्णात थे। शंकर मत के अनुनायी अच्युतप्रेक्ष नामक आचार्य से इन्होंने विद्या ग्रहण की और गुरु के साथ शास्त्रार्थ कर इन्होंने अपना अलग मत बनाया जिसे ''द्वैत दर्शन'' कहते हैं। इनके अनुसार विष्णु ही परमात्मा है। रामानुज की तरह इन्होंने श्री विष्णु के आयुधों, शंख, चक्र, गदा और पद्म चिह्नों से अपने अंगो को अलंकृत करने की प्रथा का समर्थन किया। इन्होंने देश के विभिन्न भागों में अपने अनुनायी बनाए। उडुपि में कृष्ण के मंदिर का स्थापन किया, जो उनके सारे अनुनयियों के लिए तीर्थ स्थान बन गया। यज्ञ में पशुबलि बंद कराने का सामाजिक सुधार इन्हीं की देन है। ७९ की वर्ष की अवस्था में (सन् १३१७ ई.) इनका देहावसान हुआ।

मध्व के अनुसार ब्रह्म सगुण और सविशेष है। ब्रह्मा को ही विष्णु या नारायण कहा जाता है। निरपेक्ष सत् सर्वगुण संपन्न ब्रह्मा ही परमतत्व है। उसी को परब्रह्म, विष्णु, नारायण, हरि, परमेश्वर, ईश्वर, वासुदेव, परमात्मा आदि नामों से पुकारा जाता है। वह चैतन्य स्वरूप है, पर निर्गुण नहीं, वह जगत का निमित्त कारण है। उपादान कारण नहीं, ब्रह्मा अपनी इच्छा से जगत की सृष्टि करता है। जीवों और जगत की प्रतीति ब्रह्मा के अधीन है, अतः वह स्वतंत्र माना जाता है, जब कि जीव और जगत अस्वतंत्र है। विष्णु ही उत्पत्ति, संहार

नियमन, ज्ञान आवरण, बंध तथा मोक्ष के कर्ता हैं। विष्णु शरीर होते हुए भी नित्य तथा सर्वतन्त्र, स्वतंत्र है। परमात्मा की शक्ति लक्ष्मी है। लक्ष्मी भी भगवान की भांति नित्य मुक्ता है और दिव्य विग्रहधारिणी होने के कारण अक्षरा है।

मूर्तियों की स्थापना करने के द्वारा इन्होंने अनेक प्रकार की योग सिद्धियाँ प्राप्त की थी। और इनके जीवन में समय-समय पर वे प्रकट हुईं। इन्होंने मूर्तियों की स्थापना की और इनके द्वारा प्रतिष्ठित विग्रह आज भी विद्यमान हैं। श्रीबदरीनारायण में व्यासजी ने इन्हें सालग्राम की तीन मूर्तियाँ भी दी थीं, जो इन्होंने सुब्रह्मण्यम् उडिपि और मध्यतल में पथरायीं। एक बार किसी व्यापारी का जहाज द्वारका से मलाबार जा रहा था। तलुब के पास वह डूब गया। उसमें गोपीचन्दन में ढकी हुई एक भगवान श्रीकृष्ण की सुन्दर मूर्ति थी। मध्वाचार्य को भगवान की आज्ञा प्राप्त हुई और उन्होंने मूर्तियों को जल से निकालकर उडिपि में उसकी स्थापना की। तभी से वह रजतपीठपूर अथवा उडिपि मध्वमतानुयायियों का तीर्थ हो गया।

एक बार एक व्यापारी के डूबते हुए जहाज को इन्होंने बचा लिया। इससे प्रभावित होकर वह अपनी आधी संपत्ति इन्हें देने लगा। परंतु इनके रोम-रोम में भगवान का अनुराग और संसार के प्रति विरक्ति भरी हुई थी। ये भला, क्यों लेने लगे। इनके जीवन में इस प्रकार के असामान्य त्याग के बहुत-से उदाहरण हैं। कई बार लोगों ने इनका अनिष्ट करना चाहा और इनके लिये हुए ग्रन्थ भी चुरा लिए। परंतु आचार्य इससे तनिक भी विचलित नहीं हुए, बल्कि उनके पकडे जाने पर उन्हें क्षमा कर दिया और उनसे बड़ा प्रेम का व्यवहार किया। ये निरंतर भगवत-चिन्तन में संलग्न रहते थे।

मध्वाचार्य कई अर्थों में अपने समय के अवधूत थे, वे कई बार प्रचलित रीतियों के विरुद्ध चले गए हैं। उन्होंने द्वैत दर्शन के ब्रह्मसूत्र पर भाष्य लिखा और अपने वेदांत के व्याख्यान की तार्किक पुष्टि के लिए एक स्वतंत्र ग्रंथ 'अनुव्याख्यान' भी लिखा। श्रीमद्भगवद्गीता और उपनिषदों पर टीकाएँ, महाभारत के तात्पर्य की व्याख्या करनेवाला ग्रंथ महाभारत तात्पर्यनिर्णय तथा श्रीमद्भागवत पुराण पर टीका, ये इनके अन्य ग्रंथ हैं। ऋग्वेद के पहले चालीस सूक्तों पर भी एक टीका लिखी और अनेक स्वतंत्र प्रकरणों में अपने मत का प्रतिपादन किया।

प्रह्लाद - गाथा

चित्रकथा

तेलुगु में - श्रीमती दीपश्री
हिन्दी में - डॉ.एम.आर.राजेश्वरी
चित्र - श्री के.तुलसीप्रसाद

दैत्य वंश में जन्म लेने के बावजूद, विष्णु भक्ति के कारण दैवीयगुण संपन्न होकर प्रह्लाद श्रेष्ठ बना। उनके पिता हिरण्यकशिपु, महाविष्णु का वैरी है। सहोदर हिरण्याक्ष के संहारक विष्णु पर वैर रखकर, ब्रह्म से वर माँगने के लिए जंगल में गया।

इंद्र ने यह सोचा कि हिरण्यकशिपु जंगल में मर गया। उसने उसकी पत्नी लीलावती का अपहरण किया तथा उसके गर्भस्थ शिशु की हत्या कर दैत्यवंश को आगे बढ़ने से रोकना चाहा। नारदजी चतुरता से लीलावती की रक्षा करके, अपने आश्रम ले आया।

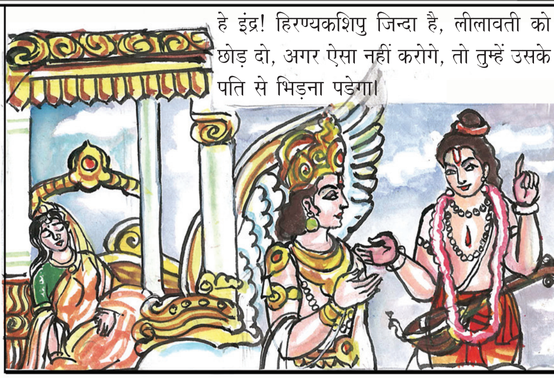

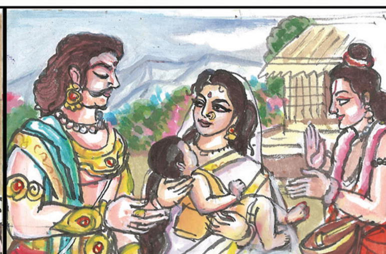

आश्रम का परिसर विशेष रुप से नारद के विष्णु भक्ति के वचनों से अनुगुंजित होते रहने के कारण प्रह्लाद में विष्णु के प्रति अपार भक्ति पनप उठी। ब्रह्म से वर प्राप्त करने के उपरांत, हिरण्यकशिपु नारद के आश्रम पहुँचकर लीलवती के वापस ले जाते समय नारद के प्रति आभार प्रकट की।

पाँच वर्षीय प्रह्लाद के गुरुजन चंड़ामार्क, उसे विद्या प्रदान कर, अपने पिता के पास लिवा लाये। गर्भ में रहते ही समस्त ज्ञान प्राप्त करने के कारण, सारी विद्या प्रह्लाद के लिए सूर्य के सामने एक दीप के समान लगा। पुत्र की हरिभक्ति हिरण्यकशिपु के लिए असहनीय लगी।

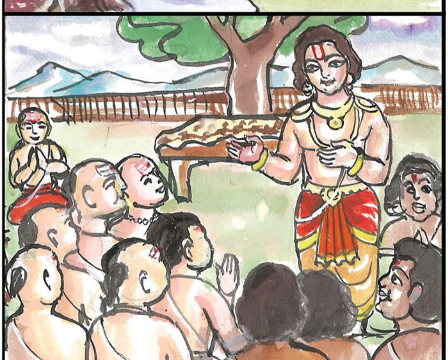

मेरा पुत्र जब तक हरिभक्ति को छोड़ता नहीं, तब तक इसे अंधकारमय कारागार में रखो, और खान-पान देना बंद करो।

हिरण्यकशिपु के सूचनानुसार चंडामार्क ने प्रह्लाद को हरिभक्ति से दूर रखने का वृथा प्रयास किया, हिरण्यकशिपु में द्वेष दोगुना हुआ।

शासक के आज्ञानुसार दंड़नायक ने प्रह्लाद को खाने-पीने की चीजें नहीं दीं, उसे अंधकार में कैद कर दिया।

बिना भय खाये, भूख-प्यास से चिन्ता न रख, प्रह्लाद हरिनामस्मरण में ही निमग्न रहा।

भक्तवत्सल विष्णु ने अपनी लीला दिखाई। चिन्ताग्रस्त माँ के पास प्रह्लाद बनकर, तथा प्रह्लाद के पास माँ लीलावती बनकर आया, तथा उनके भूख-प्यास मिटायी।

हरिभक्ति से च्युत नहीं होनेवाले प्रह्लाद को, हिरण्यकशिपु गंभीरदंड़ दिल्वाने लगा। अस्त्र सभी बेकार गये, हाथियों से कुचलवाने के प्रयास व्यर्थ गये, उतटे हाथी, प्रह्लाद को नमन करने लगे।

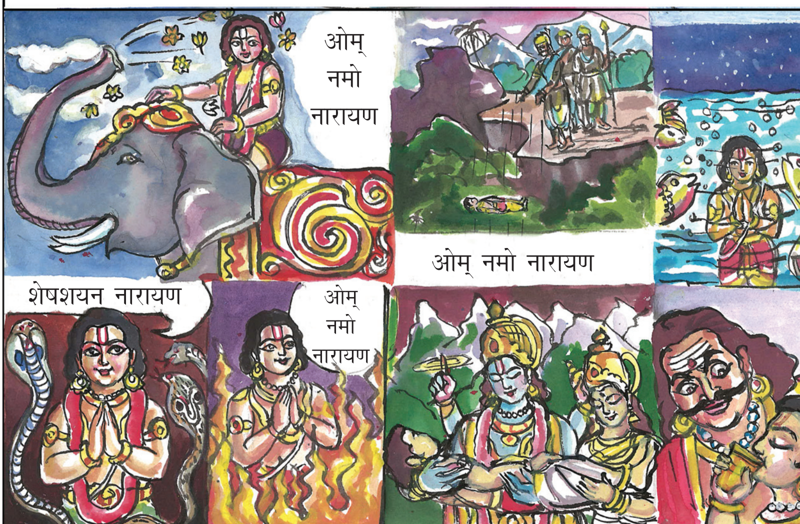

शिखराग्र से गिराया गया। लक्ष्मी वल्लभ ने बचाया।

बांधकर, समुद्रगर्भ में छोडा गया; मस्त्य कन्याओं ने बचाकर कूल पर ला दिया।

विषैले सर्पों से ढसाया गया; वे सभी फूलमालाएँ बन गईं।

अग्निकुंड में डाला गया, उसका उसपर कोई असर नहीं हुआ।

इन सबको असत्य मानकर, उसने स्वयं अपने पुत्र को विष पिलाया। इसका भी कुछ असर नहीं हुआ। प्रह्लाद ने यथावत् हरि का यशोगान किया।

हिरण्यकशिपु ने प्रह्लाद से कहा- मैं अभी तुम्हें अपनी गदा से मारुँगा। उत्तर में प्रह्लाद ने कहा-जन्म-मृत्यु हमारे वश में नहीं रहते, हरि मेरी रक्षा करेगा। कौन है यह हरि? कहाँ रहता है? पूछा हिरण्यकशिपु ने। प्रह्लाद ने उत्तर दिया- हरि सर्वांतर्यामी है, हर जगह रहता है।

भयंकर रूप धारण कर, नृसिंह खंभे से बाहर निकलकर हिरण्यकशिप के पेट को चीर-फाड़ा, उसका संहार किया। मुझ पर विश्वास रखनेवालों का हाथ मैं कभी नहीं छोड़ता-नरसिंह ने कहा। प्रह्लाद पर पुष्प-वृष्टि हुई।

अगले महीने, एक अन्य लीला विभूति के साथ...	स्वस्ति।

बालनीति

बुराई पर भलाई की जीत

- श्री सी.सुधाकर रेड्डी

विलासपुर गांव में एक किसान रहता था। उसका नाम अजितसिंह था। अजितसिंह शेर-जैसा भयंकर और अभिमानी था। वह छोटी-छोटी बातों पर बिगड़कर लड़ाई कर लेता था। गांव के लोगों से सीधे-मुँह बात नहीं करता था। न तो किसी के घर जाता और न रास्ते में मिलने पर किसी को नमस्कार करता था। गांव के किसान भी उसे अंहकारी समझकर उससे बाते नहीं करते थे।

उसी गाँव में शांताराम नाम का एक किसान आकर बस गया। वह बहुत सीधा और सच्चा आदमी था। सबसे विनम्र बोलता था, सबकी कुछ-न-कुछ सहायता किया करता था। सभी किसान उसका आदर करते थे। अपने-अपने कामो में उससे सलाह लिया करते थे।

गाँव के किसानों ने शांताराम से कहा- ''भाई। दयाराम तुम कभी अजितसिंह के घर मत जाना उससे दूर ही रहना है। वह बहुत झगडालू आदमी है।'' शांताराम ने हँसकर कहा- ''अजितसिंह ने मुझ से झगडा किया तो मैं उसे मार ही डालूंगा।'' दूसरे किसान भी हँस पड़े। वे जानते थे कि वह बहुत दयालु है। वह किसी को मारना तो दूर, किसी को गाली तक नहीं दे सकता। लेकिन यह बात किसी ने अजितसिंह को बता दी। अजित सिंह क्रोध से आग बबूला हो गया। वह उसी दिन से शांताराम से लड़ने की चेष्टा करने लगा। उसने शांताराम के खेत में अपने बैल छोड दिए, तो बैल बहुत-सा खेत चर गए, किंतु शांताराम ने उन्हें चुपचाप खेत से हाँक दिया।

अजित सिंह ने शांताराम के खेत में जाने वाली पानी की नाली तोड़ दी। पानी बहने लगा। शांताराम आकर चुप-चाप नाली बाँध दी। इसी प्रकार अजितसिंह अनेक बार शांताराम की हानि करता रहा, किंतु शांताराम ने एक बार भी उससे झगडने का अवसर नहीं दिया।

एक दिन शांताराम के यहाँ उनके रिस्तेदार ने लखनऊ के मीठे खरबूजे भेजे। शांताराम ने सभी किसानो के घर एक-एक खरबूजा भेज दिया। लेकिन

अजितसिंह ने उसका खरबूजा यह कहकर लौटा दिया - ''मैं भिखमंगा नहीं हूँ। मैं दूसरों के द्वारा दिया गया दान नहीं लेता।''

एकबार अजितसिंह एक गाड़ी में अनाज भरकर, दूसरे गांव से आ रहा था। उसी समय बारिश हुई। रास्ते में एक नाले के कीचड़ में उसकी गाडी फँस गई। अजितसिंह के बैल दुबले थे, इसलिए खींच नहीं पाए। वे गाड़ी को कीचड़ में से निकाल नहीं सके। जब गांव में इस बात का समाचार पहुँचा, तो सब लोग बोले- ''अजितसिंह बडा दुष्ट मानव है। उसे रात भर नाले में पड़े रहने दो।''

लेकिन शांतराम अपने मजबूत एवं बलवान् बैल पकडे और नाले की ओर चल पड़ा। लोगों ने उसे रोका और कहा ''शांताराम! अजितसिंह ने तुम्हारी बहुत हानि की है। तुम तो कहते थे कि मुझ से लड़ेगा तो उसे मार ही डालूंगा। फिर तुम आज उसकी सहायता करने क्यों जा रहे हो'' शांताराम बोला- ''मैं आज सचमुच उसे मार डालूंगा। तुम लोग सबेरे उसे जाकर जरूर देखना है।''

जब अजितसिंह ने शांताराम को बैल लेकर आते देखा तो गर्व से बोला- ''तुम अपने बैल लेकर लौट जाओ, मुझे किसी की सहायता नहीं चाहिए।'' शांताराम ने कहा- ''तुम्हारे मन में आये तो गाली दो, मन में आये तो मुझे मारो, पर तुम इस समय संकट में हो। तुम्हारी गाडी फँसी हुई है। और रात होनेवाली है। मैं तुम्हारी बात इस समय नहीं मान सकता।''

शांतराम ने अजितसिंह के बैलों को खोलकर अपने बैल-गाडी जोड दिए। तदनुसार उसके बलवान बैलों ने गाड़ी को खीचकर नाले से बाहर कर दिया। अजितसिंह गाड़ी लेकर घर आ गया। वह कहता था- ''शांताराम ने अपने उपकार के द्वारा मुझे मार ही दिया। अब मुझ में वह अहंकार नहीं रहा।'' अजितसिंह कहता रहा। अब वह सबसे दया, नम्रता और प्रेम का व्यवहार करने लगा।

नीति : बुराई को भलाई से जीतना ही सच्ची जीत है।

विशिष्ट बालक

नाम : कलगा अच्युतशर्मा

जन्म : १७ सितंबर, २०१५

कक्षा : यु.के.जि.

माताजी का नाम : श्रीमती शैलजा

पिताजी का नाम : श्री के.एन्.वि.कामेश्वरराव

उसके खाते में पुरस्कार :

१) कनिष्ठ स्तोत्रकार यादगार - India Book of Records भगवद्गीता के (१०० श्लोकों का)

२) कनिष्ठ स्तोत्रकार, यादगार और लेखक India Book of Records भगवद्गीता के (७०० श्लोकों का)

वह १०० से ऊपर यू-ट्यूब में रिकोर्डिन्ग पाया हुआ है, जिनमें कुछ इस प्रकार हैं-

१. विष्णु सहस्रनाम स्तोत्रम

२. ललिता सहस्रनाम स्तोत्रम

३. शिव - भुजंग स्तोत्रम

४. सप्त श्लोकि रामायाण

५. शिव अपराध क्षमार्पण सोत्रम

६. भगवद्गीता पूरा

‘क्विज’

आयोजक - डॉ.जी.मोहन नायुडु

१) भगवान ‘कार्तिकेय’ का वाहन कौन-सा है?

अ) मयूर आ) हाथी

इ) गरुड ई) मूषिक

२) महाभारत में ‘अश्वत्थामा’ के पिता का नाम क्या है?

अ) द्रोणाचार्य आ) विदुर

इ) संजय ई) कृपाचार्य

३) माँ ‘सरस्वती’ देवी का वाहन कौन-सा है?

अ) हाथी आ) बिल्ली

इ) उल्लू ई) हंस

४) ‘प्रजापति’ किसको माना जाता है?

अ) आदित्य आ) रुद्र

इ) ब्रह्मा ई) बसु

५) ‘पवन पुत्र’ के नाम से कौन प्रसिद्ध है?

अ) अंगद आ) हनुमान

इ) वालि ई) सुग्रीव

६) किसने कर्ण से ‘कवच और कुण्डल’ दान में माँगा?

अ) इन्द्र आ) धृतराष्ट्र

इ) कृष्ण ई) शंकर

७) ‘अर्जुन’ की माता का नाम क्या है?

अ) कुंती आ) उलूपी

इ) चित्रांगदा ई) द्रौपदी

जवाब - १) अ २) अ ३) ई ४) इ ५) आ ६) अ ७) अ

चित्रलेखन

इस चित्र को रंगों से अब भरें क्या?

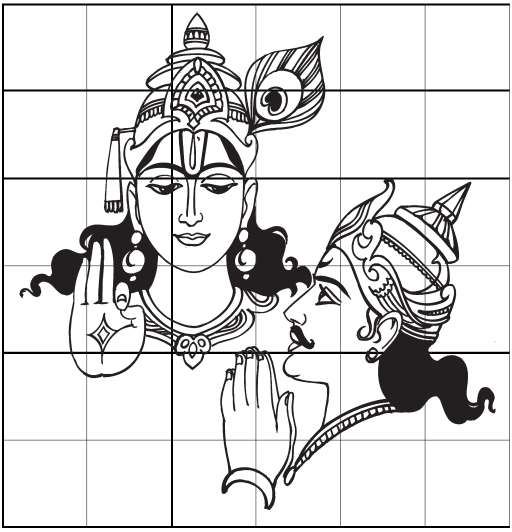

ऊपर सूचित चित्र को नीचे के डिब्बों में खींचिये -

SAPTHAGIRI (HINDI) ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams
printing on 25-11-2020. Regd. with the Registrar of Newspapers under "RNI" No.10742,
Postal Regd.No.TRP/11 - 2018-2020
Licensed to post without prepayment No.PMGK/RNP/WPP-04/2018-2020